

METHODS OR MEASURES OF REDUCING SOCIAL TENSION

सामाजिक तनाव किसी भी देश के लिये अभिवाप होना है। इससे राष्ट्र की प्रगति एवं सामाजिक समरसता बाधित हो जाती है। ऐसी स्थिति में इसको नियंत्रित करने के उपायों को बढ़ावा आदि आवश्यक हो जाते हैं। क्योंकि यह मानव प्रसिद्धि की अपज होती है जिसके कारण संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। अतः इसको जिल्कुल समाप्त तो नहीं किया जा सकता है पर कुछ हद तक नियंत्रित आवश्यक किया जा सकता है। इसकी रोकथाम के लिये समाज मनोवैज्ञानिकों ने कुछ उपाय बताए हैं, जो निम्न-लिखित हैं :-

(1) स्वस्थ सामाजिकरण (Healthy Socialization) :- सामाजिकरण द्वारा एक बालक सही रिवाजों एवं परम्पराओं को सीखता है। यदि बालकों को शुरू से ही सकारात्मक एवं स्वस्थ सामाजिकरण कराया जाए तो दूसरों के प्रति सही व्यवहार करना सीखता है। इसके लिये माता-पिता, घर के अन्य सदस्यों, आस-पड़ोस स्कूल, सामाजिक संस्थानों आदि को सक्रिय होकर रुढ़ियों एवं गलत परम्पराओं से बच्चों को बचाने का प्रयास करना होगा। बच्चों का सामाजिकरण जितना स्वस्थ होगा उतना ही Social Tension, सामाजिक विद्वेष, घृणा आदि में कमी आयेगी और राष्ट्र खल्ल होगा। अतः healthy socialization सामाजिक तनाव को कम करने का एक उत्तम जरिया हो सकता है।

(2) व्यक्ति की कुंठाओं को दूर करके :- सामाजिक तनाव को

दूर करने के लिये व्यक्ति के मन में विकसित निराशा एवं कुंठा को दूर करना आवश्यक है। वर्ग विरोध, जातिगत टकराव आदि बहुराज्यीय Frustration के चलते होता है। मनुष्य का लक्ष्य प्राप्त होने में कठिनाई उत्पन्न होती है तो व्यक्ति कुंठा का शिकार हो जाता है। घली वार समूह या समाज में व्यापक तौर पर फैलती है और तनाव उत्पन्न करती है। अतः लोगों में घटपट रहे Frustration को नियंत्रित करना जरूरी है। युद्धीय tendencies आदि में यह स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। इलाक़ि आजकल इस तरह की स्थिति में कमी आई है।

(3) उचित शिक्षा: शिक्षा के माध्यम से शही और गलत को समझने में सहायता होती है। दूसरे समुदाय के विषय में शही जातकरी मिलती है तथा उनकी सामाजिक छिथाकलाप एवं व्यवहारों को समझना असंभव हो जाता है। बच्चों को एक दूसरे समुदाय के प्रति शही शिक्षा देना अति आवश्यक है। बहुराज्यीय सामाजिक तनाव एवं साम्प्रदायिक दंगों के तहत में उचित शिक्षा का अभाव होता है। बचपन से गलत शिक्षा दी जाती है, बच्चों को चरित्रविकृत को समझने नहीं दिया जाता है। अतः उचित शिक्षा के माध्यम से वर्ग संघर्ष को कुछ हद तक रोक जा सकता है।

(4) आपत्तिजनक ऐतिहासिक घटनाओं एवं प्रश्नारणों पर रोक: - इतिहास लेखन में सावधानी बरतना आवश्यक है। जातकृतकर विवादास्पद घटनाओं को अतिरंजना पूर्वक की जाने वाली प्रश्नारणों पर रोक लानी चाहिए। इससे साम्प्रदायिक सौहार्द खराब होता है। अतीत में घटित घटनाएँ बहुराज्यीय समाज के लोगों के मानस परत से नहीं उठनी हैं। बहुराज्यीय वार कुछ स्थायी लोग इस लिखि को वर्षगांठ के रूप में मनाते हैं जिन्हें उनका स्वार्थ ही स्पष्ट जाता है, पर सामाजिक जहर भी फैल जाता है जिसका खारमिगता कीती काती के लोग भुगतते हैं। हाल में घटित दिल्ली का दंगा इसका उत्तलत उदाहरण है।

(5) परस्पर सम्पर्क एवं समझदारी: बहुराज्यीय संतादहीका के चलते

③

आपसी सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। जब एक समाज दूसरे समाज को समझने का प्रयास करेगा तब सामाजिक दूरियों कम होंगी, घोरताएँ पतपेगा। लोग निकट आयेंगे। एक दूसरे के मुर्यों, निश्वाहों, रिवाजों से अवगत होंगे और कद करेंगे। अतः आपसी समझदारी सामाजिक तनाव को निमित्त करने का कारण दूरिगार बन सकता है। शैल एवं ईद का आनन्द दोनों सम्प्रदाय के लोग मिलजुलकर मनायेंगे तब मजदूरियों और परस्पर प्रेम भाव पतपेगा।

सामान्य लक्ष्य:- समूह में मेलजोल बढ़ाने के लिए Comrades equals का निर्धारण आवश्यक है। वास्तव के शब्दों में:-

"जिस प्रकार धुम्बक लोहे के टुकड़ों को आपस में मिलाता है वैसे उसी प्रकार सामान्य लक्ष्य सदस्यों की आपसी गिनताओं को मिटा कर उन्हें संगठित कर डालता है।"

उस प्रकार यदि सामान्य लक्ष्य निर्धारित हो जाता है तो एकता, एकतामयता (Solidarity) एवं परस्पर निर्भरता का अभाव विकसित होगा है जिससे सामाजिक दूरियाँ, भेदभाव तथा तनाव दूर जाया है। राष्ट्रहित, राष्ट्रकल्याण सर्वोपरी हो जाता है।

आपत्तिजनक परम्पराओं पर रोक:- सामाजिक तनाव को रोकने का निमित्त करने का एक तरीका यह भी है कि वे सभी परम्पराओं या रीति रिवाजों पर रोक लगा देनी चाहिए जिससे दूसरे समुदाय की भावना को ठेस पहुँचती है। रामरौमी पर निकलने वाले कंडे, मुहरम पर निकाली जानेवाली गजिया को यदि खीमिन कर दिया जाए तो तनाव कम हो जाता है।

स्वस्थ राजनीति:- हमारे देश में सामाजिक तनाव के पीछे गंदी राजनीति एवं साम्प्रदायिक लोगों का अनुचित व्यवहार भी काफी एक बड़ा जिम्मेदार है। अनाधारी एवं विरोधी होंतों दलों को स्वस्थ राजनीति करनी चाहिए। अड़कड़क व्यवहार एवं विभक्तियाँ नहीं होनी चाहिए। राजनीतिक गतिविधियों स्वस्थ होनी चाहिए त कि राष्ट्र-विरोधी एवं समाज गेड़क।

अनुकूल विधान:- इस तरह की विधान एवं नीतियों बननी चाहिए जिसमें अनाधारी की भावना हो। कानून द्वारा समाज में विद्वेष फैलानेवाले

लोगों पर सरल कार्रवाई के लिए काम करता होगा, चाहे वह व्यक्ति
छिड़ी जाति या धर्म के कर्मों न हों। वैसे चीजों को प्रतिबन्धित
कर देनी चाहिए जिससे Social tension को बढ़ावा मिलना है। विवेक
सहित एवं सम्पत्ति को राष्ट्र की सम्पत्ति घोषित कर देनी चाहिए।

इस प्रकार सामाजिक तनाव को दूर करने के
प्रमुख उपायों का जिक्र ऊपर किया जा चुका है। सबसे अहम पल्लु यह
है कि चुंबित संपर्क लोगों की मस्तिष्क की अपज होगी है इसके बाद
युद्ध के मैदान में जागी है। अतः इसको रोकने के लिये लोगों की
मानसिक कुंठा को दूर करना आवश्यक होगा। स्वस्थ मानसिकता
का विकास होना अति आवश्यक है।

निष्कर्ष